

59

पुष्पक

यादग्भाः ॥ पुष्पकमनिवजिता ॥ ॥ इति दग्धातिथयः ॥ ॥ मासा न संशयत कं न्या नि
थ न स्यादयुगीनी । न कृण कं व वेध र्य विष्णु मृत्पु दया रु वत् ॥ सूर्य च सफ मी साम वष्टी
धुलो मयं च मी वृध च उधि द व यू अ ह ती या रु गु न द न ॥ दि ह यो व र्ज नी या न प ति य च न नो
धुना ॥ कलिका र्या हिया गाय विवा हा दो न स स्यु त ॥ ॥ इति कुलिकथा ग्नाः ॥ ॥ २
श्रु व म ग नू उ रू या वि दान स्या क व र्ज क ॥ च व र्ज ॥ ति रु ना मा स्या द व र्ज ॥ क क न ॥ स्मृ त ॥ स
या र्या स्या रु व र्ज यि य व र्ज मू स का म न ॥ य व र्ज मृ ग ना मा सा रु थ म स ग व र्ज क ॥ स व र्ज
व ल मा प्री ति मि उ प्री ति च क थ त । उ दा नी न प्री ति न त्या स रु व र्ज मृ ति रु व न् ॥ ॥ इति व

र्ज प्री ति ॥ ॥ अग्नि मृ ग न व र्ज रु रु ॥ पुष्प यून व र्ज ॥ अ नो भ अग्नि स्वा ति क थि ना द व ता
ग न ॥ ति ग यूर्वा उ रू ला श्र ति व या डा श्र ना रि नी रु लू नी च म नू या था ग ल सा क थि ना वृ धे ॥
रु ति का च म द्या प्र या ग न ना न का । वि ग अ र्ज म र्ज च मूल ना का ग न ॥ स्मृ ता ॥ ॥ इति
ग न प्री ति ॥ ॥ य रु मृ य म था वे र्ज मृ रु स्या द रु म ध्रु व न दि द्वा द ग च डा लि र्ज न व म र्ज च म
क लि ॥ ॥ इति ना नि म ल न ॥ ॥ मी ना ति क र्क ट वि प्रा रु डी म था रु ति दु नू ॥ गू डा य म
उ ला कू रो वे र्ज क न्या रु था मृ ग ॥ ना रु मा मृ रु रु क न्या वा मृ ति च वि स्य म न ॥ मृ य न दी प व
पु श्र स त्र म्म स दृ ग य दि ॥ ॥ इति व न प्री ति ॥ ॥ यो वा दि क र्क मृ स नि र्ज र्ज मा डा दि क र्क

उनक रूया विवाह या ननाग कः। ससृज नमिद यज हनी यदगम यिवा हलियूजा धुकि
 : स्या रूया या ४ गुरु काल कः॥ प्रका दगदिनी यवा र्यवम सफ म यिवा नवम च सूना चापुः क
 न्या या ४ कथिना गुरु॥ ॥ वृत्ति गुलु गुधि॥ ॥ आद्य वनुः प्रियं कुर्या नमना कं दिने य
 (ग १) हनी यधन संयतिः चतुर्थे कल रागमं ॥ र्यवम सूना वृद्धि व ससृम संयति मूर्धमं न सफ
 मना ऊ सन्मानं मलनं चा सृमं सृथा ॥ नवम धर्म ला रं च दगम मान सस्मिर्न प्रका स्य सर्वे नारं
 द्वा दग रा निम वव ॥ ॥ वृत्ति वनु वलं ॥ ॥ अष्टवर्षो रवः प्रो नी नव वषा च नौ हिनी । दग
 वषा रव रूया अग उद्ध लज सला ॥ द्वा दस्य का दग व र्ष गत्या ४ गु दिन जायग ॥ पूजा रि ४ ग कुने

वपी न स्या लर्म यदा यय ॥ ॥ वृत्ति कन्या सुदि ४॥ ॥ र्यवा द्वा ह्यय यदुषां र्यव ति र्यव
 या सृथा । दया प्रका यथा द्वा वरुं यश्च नना कर्क ॥ वृत्ति न कृत्तिका दया क्रमा दन्या तिला नीव ॥
 प्रका रू वृ यदा नया र्यव यय प्र तिष्ठिना ४ ल टा या ना यु ति र्यव धा जा मूर्ध वृ ध र्यव र्क प्र का ग ला य
 यदो च का नि सान्य गथा यलं ॥ द ग्म नि धि श्र विरू या दग दा वा मला वना ॥ प्र का दा वा न्य ति र्यव
 ल ग्म र्म र्म धया वृ ध ४॥ न कर्ण द्वा दगं रा नू सृती यलं तया कूज ॥ ससृजी वा सृमं सदा रं ति द कि
 गत सदा ॥ गम न स फर्म चा नि नव र्म र्मि रु का सूत ४॥ रं ति र्यव मसु का द्वा र्मि र्म वृ ध व नु मा ॥ ल वि
 ल र्म र्म दि रु कूज स्य कू लू न मृ श्री । ह रु स्य ग व नू ना र्म गने ४ कुर्या नू ल कुर्य ॥ वृ ध स्य कू न ग

पुत्रांश

स त्वत्तादु विनायनं । सुकृमादुःखदात्रिदंशसदाचकनानि (धेः) ॥ ॥ ॐ निलया ॥ ॥ सूर्ययुक्ता
चनरुणको द्यव्याना विधियन । मद्या (स) माच विनाच सानूनाधचलवति ॥ ॥ ग्रवणसद्वायंका
तदुष्टानिगद्यन अग्निमीमवधी कृत्वा गणयन्मनरावधि ॥ यावकः यावकानेष्ट विकानः कदा
लयनः । मृदुयुक्तयु विदुयु याठ वदुस्यलकृप ॥ यागनयतिगावुक्ता यामनयतिगावुलिः । याम
नयतिगावुं तु नस्मात्यान विदुयु ॥ ॥ प्रकनसास्तिन वंधा दिननाथादिरिगुहे । विवाहगु
मासं तु नुजिव नि कदाचन ॥ अग्निमीपुव कालुन्या रलूनिचानूनाधथाः अरिजिज्ञायािनादि
॥ ॥ कृत्वा विनाखया ॥ मृगवायुवाधन युवावारागथापीया ॥ पूजवसूचमूयनगथाय
न

२

अथयुक्तयाः ॥ धनिक्रयागथा (स) मा मद्यायिगवणनच । नवत्युलेन कालुन्या रलूनां रुक्तनारु
नरादया ॥ ॥ ॐ निलया ॥ ॥ विदुयु विनायायुवरादया ॥ विदुयु नयानि वक्ता नि विवाह
रानिका विदेः । न विवंधव वेधव्य कुरु वंधकूलकृयः । वूधवंधर वंधध्या प्रवद्या पुन
वंधतः । अ पूजलुक्ता वंधवल्मीलचाडचदुःखिताः ॥ यत्र यथागथा नादु कं नील च दवा
त्रिणी ॥ ॥ ॐ निवंध ॥ ॥ यरुगुदरु वंधदा युदगुयदा वंध । युतिदा वा रुदा कृया
विनायुक्तं लुगुलुः ॥ न विनासं युता रानी रोमन निधनं गणि । कनामि मूनना संध्र नादु कउ
गनिध्र ॥ ॥ ॐ नित्युति ॥ ॥ चतुर्दश अ न कुरुं कामिउलनरा सुगं । लुहयुक्तं तदि

कृति या ययुर्कं च वर्जयत् ॥ चन्द्रादिशुक्रजिवाजामिश्ररुका न काः । खलानूतानूर्म
 दार्याजामिश्ररुयदा ॥ चन्द्रावालनतावायिग्रहावश्चसकम । नृगलिगायलानूर्नया
 धिवेधयकालका ॥ ॥ वृत्तिजामिर् ॥ ॥ धर्म्योतिथि १८ मास १२ दश १०३ ४८ वंदा ४
 संकाकितायागदिनेशुआद्या ॥ ग्रहविरुकायदियश्चकस्याडागकथाग्निनृयवीनमृयु
 ॥ ॥ वृत्तिवृधयश्चक ॥ ॥ सूर्यार्यचमविन्दुनृकृणूलमसृक । चतुदशगणनैः यो
 नः कतुलस्यदशकथा ॥ उचविंशरुवचाका निधामद्यदि विंशतो । नृयाविगतिरु कं यः
 चतुविंशचतुवज्जु ॥ पूनानकनिविद्युत्पूः शूलाविनागकः । गनियानावर्गघाति कतुद

वननागकः । उचनानकनोवाका निधामावधूनागकः । कर्मकयंयततिर्यवज्जुमीयतिवा
 त्रिणी ॥ १४ ॥ ४ । ८ । १४ । १८ । १२ । २२ । २३ । २४ ॥ वृत्तिउयग्रहः ॥ ॥ यागकविममसे
 का । दयाद्याविंशति २८ सम । अष्टकयत्रिणीपूर्वार्कुरुंमृद्धिदीयत ॥ विष्करुवात्रिणीदया
 प्रीतोस्त्रातीनिगद्यत ॥ सोरागचविगताम्भान् आयुमानरुलुलियुता ॥ एतनरुहिकाङ्क
 या ३ नृनाधवातिगर्तुका । राहिलीचसूकर्मचरकोधितोअष्टप्रकिर्तिताः ॥ गंदमूर्तमृगगूल
 वृद्धोवादानिगद्यत ॥ पूर्वोवाटाकुर्वथाकाद्याघातवयुजवसू ॥ रुषणया रुनावाटावज्जु
 पुष्यप्रकिर्तिता ॥ अरुकिर्तितासिद्धाव (शुषा) यतितागक ॥ वनियसीकृतिदयायनि

श्री ७७

नचमद्यामधः। गिरधनिष्ठादातया सिद्धोयुर्वोचरात्तुनी ॥ साधनगतिरिक्कादयाशुरु
वारुनरात्तुनी। पूर्वरादयदाशुक्र रुसुवक्रागिकीरिक्काः ॥ उरुनरुदयुर्वेत्तु विगदयाच
वेधुनी ॥ सूर्याचतुससायाग रुवदकार्नेलतथा ॥ उयादगतिना नवा एकमृद्धाविसुअन
यागाकशाकनकुरु रुयाभकार्नेलवृषे ॥ ॥ ॐ तिउकांगल ॥ ॥ उदुसिसामधमीनलि
खेधुधः ॥ सूर्याचतुससोदुनोकाकिसाम्यनिगदत ॥ मीनकन्यकयायूकामससिंहनसंगतः
मकनेलदयः ककिआययिमिथुतनच ॥ कर्कगदुष्टिकाविद्धवधधुनकमूयाकाकिसा
म्यप्रतादातलजिवनिककाचन ॥ ॥ ॐ तिकाकिसाम्य ॥ ॥ ममवधः कटकश्वगल्यदि

उचतुर्थक। उरुदावचतुर्थचयलितअययत्तगः ॥ लनयायममवधः कटकनवयचर्म
॥ चतुर्थदगमगल्यदिदरुवतिसफम ॥ मननममवधः स्याकटकअकूलकयः ॥ गल्य
चनृपतिरितिः पूतनागचदिडक ॥ ॥ मासानदिनमकर्तुगिर्धनद्यटिकादय। द्यटि
कारुजयलक विवाहयविवर्जयत् ॥ ऊमसासऊमरुचनचऊमदिनवृधः ॥ अष्टमासन
अष्टस्य विवाहकानयकचित् ॥ नकन्यवनयाअष्ट अष्टयायानीपीउर्न। दयावकननअष्ट
नअष्टादावमावदत् ॥ सिंहगुलुगतकाया नविवाहककाचन। ममधुपिदिवानाथसिंह
सुयिष्ठरुप्रदः ॥ यवोसद्वैऊयागागः यमचतुगमोउयः ॥ द्योशुक्रदोचतुपूतलार्नेव

श्रीकृष्ण

[illegible]

४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

। हा ना रुकं विवाहो दो त्या अमनं उल्लेखनं ॥ ॥ इति हा ना रुकं ॥ ॥ दिन सदा न्धा रुवसि
 रुमं यं राणी च कं न्या मिथुन कुलिनः । मृग कुलालिर्वधिलः पुनाक संक्ष्मा सकृ का घटधं
 निमीनः ॥ दिवा धावल रूपा च रात्य रधा धन ना सक ॥ ५४ ॥ खेदा वधिना लग्नं ॥ कूक वग वि
 नागयाः ॥ यत्र ये का द (ग) च न्दा दिहृथा वा रुतियकः ॥ ६० ॥ गधूलिक स विरूय ॥ ६१ ॥ गवा धूमि
 मूषाः स्मृताः ॥ कूलिकः कानि साम्या वा लग्नं वरु रुमं गलि ॥ तदा यधूलिक स्मृताः ॥ ६२ ॥ यश्च
 दा वन इ विरुः ॥ यदा ना र्क गला न्ता गधूल्या पुलितं नरुः ॥ सर्वे मर्गे न का य मृगधूलिग
 त्या न तदा ॥ अरुम जीव लो मधु वृध घरा गे वा रुम ॥ लग्न वरु रुमं वला गधूलि नाग क रुदा

दिव ३

॥ ॥ इति गधूलि ॥ ॥ लग्न द का द ग ॥ सर्व लग्न वरु रुक ना गला ॥ रुगी य वा रुमं मृ
 यः ॥ सूर्य युग य (ग) रुनः ॥ च न्दा धनं रुगी यश्च कूक वरु रुगी यक ॥ वरु धा न व वरु दि
 दिव ४ यश्च द (ग) रुमो ॥ रुक यश्च धर्म कर्म नू लि न ॥ गद द ग वरु वरु न व द (ग)
 रु ॥ ॥ इति न सा द य गला ॥ ॥ द्या या यो न सा य ना ग क विग न र्क रुक नू ल द्या क
 घटिका रुया ॥ गवा क व य ला स्मृता ॥ ॥ इति दिवा लग्न रुनं ॥ ॥ पूर्वो या धा नू ना धा
 व रु रु (ग) वा व न व रि । विग र्वा व य दा मृ दि न दा त्या द रु मा द य ॥ मरु कं मृ ग नी य य न व
 मा द य ॥ अरु रु कं य दा मृ दि न दा त्या त्सा य मा द य ॥ सूर्य रा त्मो लि र्ग र्ध स फ रि न व

श्री गुरुवा ५

लावकं । दिगुर्ध्वं च दिदिनं च गगनाद्गुरुं चारुवत् ॥ ॥ ॐ तिवाजी लम्बकनं ॥ ॥ किं क
 वं किं ग्रहाः सर्वे यस्य कदाचिदस्यति ॥ मरुमातं गयुथनी गतं हं गिव कसनी ॥ लुकादय सरु
 मानि वृद्धादगलनानि च लकुमर्कं तु दावापां गुर्वलम्बयया रुति ॥ सप्यो कालं लिख्यं च को
 विवाहचरितानादि कं । मृत्विनी प्रसूयं हं व दत्ता साम्यं विजालयत् ॥ चकनादि लुन कुरु दम्य १०
 त्यामनर्पं पुद । सवायां च हं वं दानि विवाहवेष्टुं हं वत् ॥ ॐ तिरु निवर्कं ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पविद्याद्वयनिद्यानं वेष्टनिसकलं यजुः । विष्णु रुचटिकय अंशुलं सफुप्रकिर्तिताः ॥
 मद्रुदवातिर्गदव नवद्याद्यातवजुयाः ॥ ॥ ॐ तिवर्कं ॥ ॥ यताकारं लिख्यं च कं मष्ट
 कालसमन्विर्ग । य । मृत्तु कुरु वसूर्य तदा र्थं मध्यगुयं ॥ रुयं रुयं च सर्वं रुतत ४ पूर्वदिना
 लिख्यत् ॥ न कुरु रुयं मध्ययकुरुय विनागनं ॥ पूर्वस्मानरु वल्लक्ष्मी धनधान्यसमागमः
 ॥ अग्नि कोला रुवं मृत्तुः नालिकु विनासर्न दकिनं दुरुगता नी दुनी दामृत्तु मा मृत्तु यात् । ने
 मृत्तु य पुरुत्तारु मृत्तु सूर्य सोला गम्य मववा यधि मवि धवा कस्या नायुय य हिवा त्रिनी ॥ ३ रु
 न धं तारु ४ त्या दिग्भनं सूर्य सं यदं । मागत्या सर्वकां मृत्तु यतवर्कं विजात्रयत् । गगनार्थं न सं य
 न

श्री गुरुभ्यो नमः

कंसर्वसिद्धिप्रदायकं ॥ ॥ ॐ ति य ट च क्र ॥ ॥ ॐ ति श्री कालिनाथ रु गो नी शु वा ध वि वा
हः ॥ ॥ ॐ ह्यु मं रु लो मे रं शु ति यु मं क न रु यं । पु न र्व सु द यं पु सा मूलं वा रु ना रु यं ॥
विष्णु रव मा व त्स ना मा सा मा गो म ष ष्ठ रा नु नः । म क र मि धू न मी ना ल न क न्या शु रा ध ल भा
लो मा किं वं जि ना वा ना गु रं न च दि ना ग म । य ष्ठि त्रि का द्वा द ष व म मा वा सा च व जि ना ॥ ॥ ११
ॐ ति दि ना ग म नं ॥ ॥ आ डा रु यं रु द यु म् म सु ग ४ पु षा णु ति क नः । मूल रु यं गु नू ४ सु र्या रो
म त्रि का वि ना ति थि षा आ द रु यं रु य मा ल न क न्या म ष सिल । वा यं पुं ग व ण क र्या नी म
कं वा ष म न थ ॥ ॥ ॐ ति युं ग व ण ॥ ॥ गी म न क म पु न र्व सु द यं रु रु रु य म पु द या मृ ग मू ला

हल धनिष्ठा मू द्वा द षो का द षा दि न ॥ अ न्न ग षि णु रु था । ग ता न वृ ष ण म क था ४ । रा नू नु नू
ह्रि न ल न्ना वा ल ना म रु लिः १० रा ४ ॥ ॥ ॐ ति ना म क र्ण ॥ ॥ मे रु द य रु लि दं द वि धि
दं द दि ति द य । स्वा ति रु रु रु ना षा ट पु षा र्य म द य मू व ॥ सिं रु वा य द ग ल न्ना मा स था सि
व रु थ क ४ । या ज नि र्थे व नि ष्ठा न्ध सि णु ने वा कि रो म था ॥ ॥ ॐ ति नि णु क्का ग नं ॥ ॥ रु रु
दि यं व क षि न्या ध नि ष्ठा या च पु ष नि णु नो णु क वृ ध वा न धा र्य डी ति न वी व लं ॥ ल न्ना मी नं व
कं न्या व मि धू नं व रु ष १ गु रं ४ पु सा पु न र्व सु दं द ना रु ष्ठ रु नं वू व ॥ ॥ ॐ ति न व रु ष प
ध नं ॥ ॥ न ना न रु क न धा र्ज व रु या क्का म ल म नः ४ वा न धि को सु र्य सो मो न रु रु रु व ल मृ ग

श्री राजा

॥ ॐ नितवानरुक्तनं ॥ ॥ आशाशूर्नेयासनं पूर्वो सार्थादाव नृणां यमा ॥ न कुरुषु
त्रिधा सावालोरोमा कर्तुं कर्त ॥ दादणी सक मित्रिका पर्वनन्दा वव जिता ॥ लयनमृत्तमवा
सा वृषः कन्या वमनमथ ॥ शुक्र कुरुता यागः सगा ॥ अः गुरु वनु मा ॥ मा सा वृषा वृमो मा सोम
नीमा सध्व पश्चम ॥ ॥ ॐ निप्रथमान्नयान ॥ ॥ पुनर्वसु दयं अष्टा मृगवगुवला दया
रुद्र उयचनं वयां शुक्र यज्ञो जनायन ॥ लग्नः गाम्भीर्यं नृः कर्तुं सकनं मस्मथयिवा । सोम्यवा १२
नानं गुरु ॥ याग वृषा कर्म स्मृतं वृषे ॥ वृषा कर्म निद्रु यमु ऊम मा सध्व ऊमर्तं सका व
विचयवो निप्रतिपे च निधी सयि ॥ ॥ ॐ निवृदा कर्म ॥ ॥ ॥ रुद्र उयं रुद्रिदय पूर्वो

[illegible]

ॐ
ॐ
ॐ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ यूनवसुदयं विष्णुं विष्णुं सारुणी दयं । मूलमाजमघा
रूया प्रवला दणमरुथा ॥ सामगुद्रवृक्षनालिपुं निस्त्राण कर्मणि ॥ रूया प्रनियदावष्टी
नवमीचगिथिरुयः ॥ ॐ निपुसवसार्न ॥ ॥ मूनादित्तीदयं अर्धं यवनप्रसृगः
कनः ॥ जलवाक्चनं रूयाः ॥ कुमंदाकं रुमियाः ॥ ॐ निजलवायिपूजा ॥ ॥ अनू
नाधचतुष्टयमघादिगुयगकल । स्वातिष्ठति विधिद्वंद्वं नवरात्रं नमः ॥ ॥ गद्ययुक्ती
महालं ॥ कार्या रुयः ॥ गनिः ॥ कुजः ॥ यन्मूत्रिका ददनी च द्वितीया दययवच ॥ त्रिहिरिहिरिमु
रिः ॥ यः ॥ त्रिहिरिः ॥ यः ॥ त्रिहिरिः ॥ दयः । सूर्यरागादिनरं यावद्वा निवृद्धिरुलं कमान् ॥ ॥

१३

॥ ॐ निरुलपुवारु ॥ ॥ पूर्वामादिनिद्वंद्वं विधियुग्मरुलिरुयः । उग्रनारुमुनी रुलरुयं
मूलं च नवगि ॥ मेघं विपीचलं ग्रयिर्हि रुः ॥ कं न्याद्यदा दृषः ॥ मिथूनं मकराग्रार्धः
वासुकर्मनिका विदेशः ॥ ग्रवः ॥ यवेगायकार्कः ॥ रुमुणरुथा । मास्यसुमागं निर्वधवा
मुकर्मनिगस्यान ॥ वज्रयाद्यागूना निद्यनियानां निर्गंधको । विष्णु रुयनिद्यावर्धवा नारोम
द्यराकनः ॥ ॥ ॐ निवासुकर्म ॥ ॥ आदागुतरिखां रूया विष्णुसारुनिद्वयं । ग्याकाव
दादनी त्रिका सविचक्रयमीमी ॥ युनियवर्धुमेवा नो ग्याकागनिकुजो तथा सर्वदवेयमि
ष्टास्या लिंलं ग्रा रुनायनः ॥ ॥ ॐ निदवातयवायिकुपुरुदा ग्यादि युमिष्ट ॥ ॥

श्री ह्रीं

[illegible]

पूषा अश्विन वसु मृगः । सर्वसिद्धिफलः पूषा विशार्याचतुर्भुजा ॥ ०० ॥ ॐ निसर्वदि
 नेमननकृणनि ॥ ॥ यतियत्सुनवस्याच पूर्वस्यादिनिथोगिनी । अग्नि कोण तृतीया
 यां मकादध्यां सा स्मृता ॥ अथादध्यां च यश्च म्यां दक्षिण स्यां निवयिया । द्वादध्यां च चतुर्था
 चतुर्नेमनः काणयोती चतुर्दध्यां च षष्ठा च यश्चिमायां यागिनी । पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायाः
 काणयावर्ति ॥ दशम्यायां च दक्षिण्यायां मूर्धनस्यां निवयिया ॐ नननताणवा षम्यां द्वाद
 ध्यां च यागिनी ॥ यागिनि सूषदा वाभयुक्ता कुतदायनी ॥ दक्षिण धनरुक्चि सन्मुखम
 ननयदा ॥ ॥ ॐ नियागयां निविध ॥ ॥ सास्ययतियदा कुक्का द्वितीयाकार्यकारिनि
 श्रुता गदा तृतीयां च चतुर्थिक नरुयदा ॥ यश्च मिथिया निर्व्यचषक् च कलहायिया ॥ रु

दीक्षा

कथानसमायुक्ता सफसुखदा सदा ॥ अष्टमीयाधि दानिर्णय नवमी चण्डिका स्मृता ॥ दश
मीरुति लालाया दका दग्धा यीरुमदा ॥ द्वादशी यानसंदहो सर्वगिदा जयोदगी शुक्रा वाय
दिवा कृष्ण वज्र निया वहुर्दगी ॥ तथैव तु अमा वास्या पूर्णिमा या च वज्रयत ॥ तिथि कथं
च मासाकं पुरुनाकं दिनकथं ॥ अष्टमं पुरुनाकं सप्तमं पुरुनाकं निर्णय ॥ पूर्वस्या वामना १८
नाकं उत्तराश्विनादिर्गवज्रत ॥ याज्यां दक्षिणनाकं यागिणी वामतस्तुला पुरुषादयमाख्या
तं चंदमासं मुख २३ र्द ॥ ॥ इति नाकवज्रं ॥ ॥ चन्द्र चरति युवादि कुमनदिकवहुसु
र्यं ॥ मखादिकं वृजगयां सन्मुखश्चैव गहन ॥ इति चन्द्र विचर ॥ यामया रगवगाजो च

वामयुद्धादिना न वि॥ याज्ञस्मीन्दकि॥ वामयवस्य पृष्ठकद्वयं ॥ ॥ ॐ नितिविविचान ॥
 ॥ ॥ मनु॥ ४८॥ नृ॥ १२॥ दिग्मा॥ १०॥ सूर्या॥ २॥ न॥ स॥ व॥ द॥ ४॥ वि॥ न॥ २॥ कु॥ मा॥ नृ॥ वि॥ वा॥ ना॥ मृ॥ दु॥ र्क॥ ४॥
 कु॥ लि॥ का॥ मी॥ दि॥ न॥ ४॥ ॥ ॐ नितिमृ॥ दु॥ र्क॥ लि॥ क॥ ॥ ॥ ग॥ ना॥ ना॥ या॥ दि॥ ग॥ नि॥ ना॥ य॥ अ॥ रि॥
 ध॥ वि॥ वा॥ जि॥ ना॥ या॥ सूर्या॥ ४॥ कु॥ वृ॥ ध॥ र्ग॥ ना॥ म॥ द॥ जि॥ वा॥ कु॥ ४॥ कु॥ मा॥ नृ॥ ॥ या॥ वा॥ ला॥ य॥ उ॥ दि॥ व॥ स्य॥ न॥ दा॥
 दि॥ ग॥ ना॥ य॥ कु॥ मा॥ नृ॥ ॥ ४॥ रु॥ ग्र॥ रु॥ स्य॥ ४॥ रु॥ दा॥ मृ॥ दु॥ र्क॥ ना॥ न्य॥ स्य॥ ४॥ रु॥ दा॥ ॥ ॥ ॐ नितिमृ॥ दु॥ र्क॥ द॥ व॥ ना॥ ॥
 ॥ ॥ ति॥ थि॥ वा॥ न॥ अ॥ न॥ क॥ र्ग॥ ना॥ मा॥ क॥ न॥ स॥ म॥ नि॥ र्ग॥ दि॥ ति॥ व॥ रु॥ हि॥ गु॥ नि॥ र्ग॥ न॥ स॥ स॥ क॥ रु॥ ना॥ जि॥ र्ग॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ १॥ २॥ ॥ आ॥ दि॥ शु॥ न्य॥ रु॥ व॥ दा॥ नि॥ म॥ क्ष॥ ग॥ न्य॥ लि॥ या॥ रु॥ र्य॥ अ॥ न्य॥ न्य॥ रु॥ व॥ न्य॥ स॥ र्वा॥ क॥ वि॥ उ॥ यी॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रुवंतु ॥ १२२ ॥ ॥ वृत्तिसवविनाल ॥ ॥ गणित्यवाहगमनादिससु सूर्ययवाहमदि
किं वेनायी ॥ यस्तु जयस्यादरमानरा ॥ गतिर्केचमागविहर्तसमर्क ॥ २०० ॥ वृत्तिजाजा ॥
॥ ॥ दक्षिणद्वयदण्डं ॥ समुद्युक्त निवाचन ॥ नामयुक्तं ॥ निर्यानाधयदसुग
॥ २०१ ॥ वृत्तिशुक्लदाखगुण ॥ विद्यानसुयुलस्यधममौनविरागवो ॥ अनयोसो ॥ १०
वृक्षर्वदाजाशामयुगनोकुज ॥ २०२ ॥ वृत्तिधनूविद्यानसु ॥ ॥ युध्यारुणयदायुर्मस्र
तिष्ठत्यलमृतिपी ॥ रुक्मार्कनामृगमेततथा ॥ अथावयुंते ॥ २०३ ॥ अहानिगतिर्वेगलि
कयविक्रयलव ॥ धावन्दुलार्गवजिवाताः ॥ गकनमूर्कमं ॥ २०४ ॥ वृत्तिकयविक्रय ॥ ॥

रुक्मायश्च पृथाधनिष्ठासूचकांवन ॥ नर्कयनिदधदसं लमाकेतुत्रुलार्गव ॥ २०५ ॥
॥ वृत्तिनकवसुसूचकवृनादियलिधन ॥ ॥ धनीस्यपश्चकयासा ॥ रुक्माकासादिर्म
ग्रह ॥ याश्चदक्षिणदिग्भागागृहानाद्धादनं तथा ॥ २०६ ॥ वृत्तिर्यवक ॥ ॥ उलार्गव
वोनायसामसागकूचमृति ॥ वृधधनं ॥ पुत्रुलानि ॥ शुक्लद्वयगनोसुख ॥ २०७ ॥ वृत्ति
नार्गव ॥ ॥ रुक्मायश्चपृथाधनिष्ठासूचकांवन ॥ नर्कयनिदधदसं लमाकेतुत्रुलार्गव ॥ २०८ ॥
यत्रवतिष्ठितं ॥ सुल ॥ नम ॥ वन्दुयवग ॥ २०९ ॥ ॥ सूर्यनाग ॥ कुजमृथु ॥ वेधयववृक्षसु
न ॥ जीवगुकायदु ॥ सुयव ॥ गसंयदवधु ॥ २१० ॥ वृत्तिवधुयवग ॥ ॥ अहानिगतिर्वेगलि

पुष्पाक्ष॥

त्राहिणीवयुगवर्षसु। नागीस्नानवर्षगिचवर्जयइगुनार्क्य॥ २१०॥ लिङ्गातिथोवर्षलखन
वाचवर्षविलोमया। स्नानवर्षागीर्षायाकं दिङ्गलोजनसंयुतं॥ २११॥ ब्रूतिनागीस्नानं॥ ॥
अनन्दकालददधधूमाकाथपुजायति॥ सोम्यध्वाकाधेजंश्रयिणीवत्सावकसूयुता॥
॥ २१२॥ कृष्णमृगमानसाख्ययमाकात्रवृकसूयुता॥ उत्पानमृग्युक्तानाथसिद्धिप्राप्त्युक्तानाम् ११
ता॥ २१३॥ मृगलागदमार्तमेनाकसध्ववनः सिलावर्द्धमाथविष्ण्यामृकविमतिविश्व
मी॥ २१४॥ मृगलिङ्गणीतनस्मावर्षायाकिंतिनन्दनं॥ वृधरुक्तानूनाध्ववनवराजयुता
हिता॥ २१५॥ लालवर्षाकृतायादाज्ञनेगतरिषायदातदानन्दाकथायागस्याकालदंजद

यः कुमातु॥ २१६॥ ब्रूतिनकृष्णवालस्नानंदादियाग॥ ॥ रुक्मसूर्यमृगसामवाचलोमसु
थाष्टिणीवृधमेकागुनोयुधालवतिरुगुनन्दनं॥ २१७॥ त्राहिणीसूर्ययुगवर्षसर्वसिद्धियदा
यक॥ असावमृगसिद्धिप्राप्त्यागयोर्कृष्णानागने॥ २१८॥ ब्रूतिमृगसिद्धियाग॥ ॥ विष्ण
वादिचतुर्ध्ववसूर्यवालकुमनवउत्पानमृग्युक्तानाथसिद्धिप्राप्त्युक्तानाम् २१९॥ ॥
ब्रूत्युत्पानमृग्युक्तानासिद्धियाग॥ ॥ तिथ्यकनसमायुक्तावार्ताकायदिजायते। उयाद
र्षाकृष्णकवाथानिनिंशः सदागुरु॥ २२०॥ ब्रूतिकृष्णवयाग॥ ॥ मद्यासूर्यविष्णवाव
स्वदोहोवाडा। कृष्णगुनोवृधमूलविधिपुक्रयमर्घ्यदण्णो कल॥ २२१॥ ब्रूतियमर्घ्यदयाग॥ ॥

२३। प्रयोगः॥

नन्दासूर्यमंगत्रव रुद्राक्षवचन्या ॥ वृद्धाजयागुनोविका गनोवृद्धवमृगुदा ॥ २२३ ॥
॥ ॐ निमृगुयाग ॥ ॥ श्रीधरुग्वियदा रुद्र का नाकादिवनावना गनयदादिणी पूर्वसि के
वानमनूकमाग ॥ २२४ ॥ श्रीधरोनेद्वर्तदव्य लरुद्यका रुद्रकन का नाकागुयावेति दिव्यनर
वकिंचन ॥ २२५ ॥ पुनर्वसुमृगगुदा अक्षमेरु कन स्रथा । पूर्वाखाटा रुनासाये मूलं दक्षिणवात्रि
ण ॥ २२६ ॥ रुद्रिका नापी वृष्टा विजाल चत्रवती । गतंधरा गुवना नवमक्षपवालि नश ॥
॥ २२७ ॥ ॐ निनरुद्रवात ॥ ॥ शुभमिंद्रदिग्भवत्मा मातानां चतिर्कं ठिकं । आदोरादयद
रुद्रा सद्यमादिक्कुरु कुर्य ॥ २२८ ॥ याग विवार्द सर्वधं दालच गृह मया ॥ ॥ रुद्रयतिमिननंय

१८

ईवत्सया रिमूर्धं लयज ॥ २२९ ॥ ॐ निनागवा मु ॥ ॥ उर्ययमंश्चवाग्नेयदृक्विष्णोयश्चमृ
गगुर्य ॥ चक्रमाडा सुनरुद्र चत्वात्रिचयूर्वसो ॥ २३० ॥ पुष्यगुर्यं न स सार्धं मघार्या लणीव
चव ॥ दयं दयं चरुार्धुष्माकेर्यं रुद्रयं चव ॥ २३१ ॥ विजाला ह्या न क म कं चतुष्क च दिदेव
न ॥ उर्यं ह्या द नू ना धार्या अक्षर्या चरुय स्मृतं ॥ २३२ ॥ मूलं राडा शुतुर्कं च पूर्वाषाठ नथ
रुव ॥ उर्यं चारि जिगिथार्कं अत्राल चरुयं रुथा ॥ २३३ ॥ धनिष्ठाया च चत्वालिनगर रिमासु
चदयं । दयराडयदष्टेव दार्णिगत्रयिचानिभ ॥ २३४ ॥ ॐ निनरुद्रसंख्या ॥ ॥ लग्ना
कमययसूर्य रुद्रवा लस्यदुखनं आकांदिद्या च रुद्र लनयष्टष्टम चय ॥ २३५ ॥ ॥

ग

दादणदगमलोम साकिन्या इव स्मृतं ॥ वनदवी रुवदा सा ॥ सफुम द्वादणवूध ॥ २३० ॥
 जामिष्ठ द्वादणजीवं दवदा सा निगदय ॥ अष्टसौ थं दे लपूष्ठ जला दया च दूषनं ॥ २३१ ॥
 ॥ गनिष्ठ नयय वाष्ट दावः स्या दामया रुज ॥ जमिष्ठ द्वादणनादू कुग गिष्ठा तिदूषनं १२
 ॥ २३२ ॥ श्री रुदा सारुवसाय रुधा रुनि विवर्काना नृषगगलदया च इनकू स्वप्ननिर्क
 रुकु ॥ २३३ ॥ मिथून वमा रुमाया दाषवना कला लिनः कर्क सा किनिदाया दास्यनादन
 धमोनना ॥ २३४ ॥ सिंदु जलं पुनदाया दिगी न जना रुविः प्रददा यष्टर्क न्यायां काधा ल
 स्या रुविर्वाथा ॥ २३५ ॥ रुज्ज्वाल रुवादाया रुल्यसंतान यिदन ॥ विष्ठी कनागदायाष्ट रु

लाद रुकुवूधिना ॥ २३६ ॥ चायं दुरुवादाया कलस्य कादनं यथा ॥ मकलं चर्चिका
 दासा दुरुवृत्तानिला ॥ २३७ ॥ मनिनः पुनदायाष्ट कुरुया दुरुस्य यिदनं ॥ मीन
 चया जागिली दाया कलर्ज्जालदुर्गनं ॥ २३८ ॥ अयधर्म रुतियष्ट वष्टयायग्रहाज
 दा रुनागत्रं जलंग रु रुस्यदायः कनारुव ॥ २३९ ॥ गनेऊ न कूज ससु गलसूर्यस
 र्वगजा नादू च विष्ठी नोन रुः शाकि यूजा द्विजा चने ॥ २४० ॥ स्वकुरु गगजा दायः ॥
 यत्र कुरुय ना रुवः ॥ गगुरु रुग रुदाय मुगु स्वजन मरुवः ॥ २४१ ॥ रुतिदावल रुन
 नं ॥ ॥ आदित्य चाग्निनी रुसा मूलं पूषा रुनागुर्या सिद्धिजा गमध निष्ठा च तिथिन

२५॥ पुत्रा ॥

यष्टमिगथा ॥ २४८ ॥ सूर्यविष्णुखरलुणी अक्षमेणमघस्तथा । वरुद्वेगी द्वादशी च
विरुद्रासकृमीनथा ॥ २४९ ॥ सामयूया नूनाक्षव श्रवना नाहिनी मृग नवमी दशमी
वायि सिद्धिया गयुकी निगा ॥ २५० ॥ बंड विष्णुविष्णुमात्र तथा बाधद्वय वृद्धे । च
कादशी तथा षष्ठि वरुनिया उया दशी ॥ २५१ ॥ रोम मृग श्विनी सार्थमगश्व कानरादया २०
॥ सिद्धाष्टमी रुनीया च सकृमी च उया दशी ॥ २५२ ॥ निर्घासत रिषादा च धनिष्ठा पूर्वराद
या ॥ मघा च उनाषादा च द्वितीया दशमी कुज ॥ २५३ ॥ वृध नूनाक्ष पृथग् रुनीका नाहि
नी मृग ॥ सिद्धिया गयुकी च द्वितीया सकृमी धिथि ॥ २५४ ॥ वृध मूल धनिष्ठा च नवति

वा श्विनीयम ॥ रुनीया नवमी वायि तर्कयति यदा तिथि ॥ २५५ ॥ शुक्रपृथ्वा विष्णुमात्र
मेणयूया पुनर्वसु । सिद्धिपूर्वमावास्या च दशमी र्यच मितिथि ॥ २५६ ॥ जीव ४ गत रि
षादा च रुद्रिका रुद्ररा लुणी ॥ विंध्यमृगश्रुमी षष्ठि च उथि च विवशीगा ॥ २५७ ॥
शुक्रविजयमायूया श्रवण ॥ पुनर्वसु ॥ सिद्धा च कादशी षष्ठि यति यच उया दशी ॥ ॥
॥ २५८ ॥ रागव नाहिनी पूषा अक्ष ॥ मघा तथा । द्वितीया सकृमी वायि वरुनिया सदा व
धे ॥ २५९ ॥ गतेष्वनाहि विषा मिश्रवण पूर्वरा लुणी । मघा च नमी सिद्धा च उथि च वरुद्व
शी ॥ २६० ॥ गते रुद्रा रुद्रा वाये विष्णु वारुन रा लुणी । नवति च सदा वरुन तिथि षष्ठि

वसुमी ॥ २०१ ॥ ॥ इति नक्तु तिथि बालगुरु राश्यागा ॥ ॥ चर्ल चर्ल स्मृत्वा ति
 पुनर्वसुगुरुयः । कुलमूर्गमघा पूर्वो हनीय रनपीतथा ॥ २०२ ॥ ध्रुवसिर्ल विनिदि
 ह्नादिनी चार्कमात्रयं ॥ तिथ्या डारु वम (स) ता म्मष्टा डामूलमवच ॥ २०३ ॥ लघुकि
 यं स्मृत्तं युष्मा रुका नून्य रिर्क र्कथा । मृदुमेतव विज च नूलाभन वति मृग ॥ २०४ ॥ २१
 मृगं मधवर्न या कं वि सा म्म ह्नी कार्कथा ॥ नक्तु य म्म क्म निना म्म ल्या नि कालय
 त् ॥ २०५ ॥ गतो चर्क न ना कालं लिखं द्युग निरु वत् ॥ गन्तु कर्त म्म दत्वा यव त्ना मन
 लस्यव ॥ २०६ ॥ ताव दिवालय रुत क्क यं गुरु म्म थो र्क ॥ चर्क म्म खं व नक्तु च त्वा नि

दकि (न) कल ॥ २०७ ॥ उर्यं उर्यं पादया घ वाम रुत वतु ह्यी ह्म दयं यश्च उर्यं मो व न्तु
 पुश्च दयं दयं ॥ २०८ ॥ हानि ना क द क रुत नो रो वाम च ना गी ता ॥ ह्म दिष्टी म्म क्क ना र्क
 पाद य र्क ग न सदा ॥ २०९ ॥ नक्तु म्म र्गं पु द्म म्म र्ग नि च क्क वि वा न सदा ॥ यय युजा त् दि
 जा वी रि कल्या न जा यत सदा ॥ २१० ॥ ॥ इति ग नि चर्क ॥ ॥ म्म य स नो र्क ल म्म पु रा
 सदा वृ द दृष्ट मिथु न जा यत यी ज रु नी म्म न ह्म न वृ च ॥ २११ ॥ क को का सी न क वा ध
 ग क्क पु र्क म्म ग धिय ग नि ११ व च र्क ना र्क माल वा या कि र्क र्क यं ॥ २१२ ॥ पु ला विष्ठी क वा
 य म्म य दा या ति ग नि ध्व न । न व र्क कि न दाम घा १४ र्क र्क र्क र्क र्क ॥ सूरि क्क म्म क न क्क र्क

जायन्तवः कृष्णानो। मीनवः सर्वत्राकानां दूरि कृष्ण कृष्णारुवन् ॥ २०३ ॥ ब्रूतिगतिविधानः
 ॥ यत्तु मास्यत्र विवाता जायन्तं यंच सर्वतर्ग। विदिता कुतुरुयश्च तदा स्रंय मरुत
 यं ॥ २०४ ॥ सामस्य यंच वाताश्च यत्तु मास्यरुव किदि। धनधान्य समृद्धिं पुष्टं रवनि
 सर्वदा ॥ २०५ ॥ यत्तु मास्यमंगत्रस्य जायन्तं यंच वाता लकनयुनिता पृथी कुतुरुय ॥ २०६ ॥
 सुदारुवन् ॥ २०७ ॥ वृक्षस्य यंच वाता ॥ यत्तु मास्यनिलं तर्ग ॥ यजानां सुखमयतं ॥ २०८ ॥
 सुहृदं वप्रजायतं ॥ २०९ ॥ यत्तु मास्ययंच वाता जायन्तं वदुस्यति। विदुः यश्चि मदसः
 विदुः रुद्धं वजायतं ॥ २१० ॥ शुक्रस्य यंच वाता ॥ यत्तु मास्यनिलं तर्ग ॥ यजानां वदुस्यति

हिरुवा। सूर्यगुप्तवर्तन ॥ २११ ॥ गतिश्च नयंच कं दृष्ट्वा पातारं कस्य नरुपी ब्रूत नंद
 गरंगश्च वक्रिदा रुमरुघता ॥ २१२ ॥ ब्रूत्य क मास्ययंच वाता रुतं ॥ ॥ अथ यत्तु वि
 गतिः सूर्य संकः सामववा उग ॥ कुजयश्च दगां तु ल्या वृधवा न वदुदगी ॥ २१३ ॥ यथा द
 गगुना वीरं द्योदगा कं कुकुया ॥ गं का मूलं यदा द्याया। मध्या द्रव प्रजायतं ॥ २१४ ॥ तदा
 वारिः उदारवाच ॥ घटिके का स्रुता वृधे। अष्टकाया नि सर्वा निः सिद्धिं याया द्वा ता निच
 ॥ २१५ ॥ जगति हि जिना ज्ञास्यान् वा पातं सिद्धि रुरुदा।
 ब्रूति हि जि सुदुर्गुरुतं ॥ ॥ अथ वृद्धिः स्रुतु गत्यान् वेतव नरुसंय

श्री गुरुवाच

दशवेगाश्ववीग्रहागर्भाः अष्टवृद्धिप्रत्ययसी ॥ २८४ ॥ आवाटवादिनेष्टकः ऊर्ध्ववति
द्वन्द्वर्ह ॥ अवलवयसुवीकाः राहुधन्यसमुच्चयः ॥ २८५ ॥ आग्निनी सर्वसम्यक्किं शुक्रका
रिक्कमार्ग्याः ४ योषमाद्यद्वन्द्वर्ह ॥ यद्युदतिरुगुः सुगः ॥ २८६ ॥ वृत्तिशुक्रादयस्सुल ॥
॥ ॥ पूर्ववायुहालिकायाः युजाख्यावलेयाः २ सर्व ॥ यत्रावर्तवद्विर्ह दक्षिणजायतकुर्व ॥ २८७
॥ २८८ ॥ यद्विभक्त्यसम्यक्किं रुक्लं धनं संरुवः ॥ यदिखवलिखावृद्धि दृगनाजावर्तप्रयत्न ॥
॥ २८९ ॥ वृत्तिदृगनागनिरुल ॥ ॥ प्रकादर्थकारिकस्य यदिमद्यसमिक्तं ॥ आवाटवगदावृ
ष्टिजायतनागसंयत् ॥ २९० ॥ मार्गनिषत्यवास्तुमां दृष्ट्यन्विन्दुना जडा गदावृष्टिभव

अत्रासप्तसंयायतकुर्व ॥ २९० ॥ कस्ययकदगम्यां वृष्टिषोषस्यजायत गदागदयदमा
स्यावृष्टिरुवतिरुयसी ॥ २९१ ॥ वृष्टिष्यमाद्यसकम्या अष्टमूलनवयगिः १ नकुर्ववालिवा
रुमुगदानेपृथगमरि ॥ २९२ ॥ र्ववम्याप्रथमयकः अवलवयववमि ॥ यथावास्तुदमाध
नोधनायाकजलेरपि ॥ २९३ ॥ आवाटपूर्णिमायाकुञ्जतनकुर्वविचालयत् ॥ पूर्वोखाटसुति
रुस्यात्सुलद्वारिकमुच्चके ॥ २९४ ॥ उरुनावाटकग्नानापीदाकटकिनागतिः १ अष्टस्यप्रथ
मयकः प्रतियद्यायदावर्तः ॥ २९५ ॥ नववालगदवायुवातिर्कागलकलकटा अष्टक
विग्रहागर्भा वृद्धद्विर्हसुवर्कः अनावृष्टिनिर्वर्तः ऊर्ध्वकायिनलस्यत् ॥ २९६ ॥ सामगु

दयन (थेके के) यान्त्रिक मकरं ॥ २ ॥ इति यंत्रमुद्वेकं नालोवेकं यदा यदा ॥ ऊँ यथा न
 कर्मकं च सदां दूपादया दया ॥ १० ॥ मस्तुकं यद्वर्धितं मुखं मीनं नालिका ॥ के (ध) जगत्
 धर्ममीवाकृष्णं न च गुरुवंत ॥ ११ ॥ यतो च जायत वो नो दूय च स्वानन ॥ खल्यो नालिका ॥ २२
 नालो पुनराननं गुरु ॥ १२ ॥ ऊँ यथा यत्र दली स्यात् ॥ दल्यो यत्र यद्वर्धय ॥ चक्रं सूर्ये न कृत्वा न ज ॥ २२
 नालावधिर्गण्य ॥ १३ ॥ इति नन चक्रं ॥ ॥ अमयं गुरुवं दूकं नालिका ॥ सफ मस्तुकं ॥ पृष्ठं
 सफ कृत्वा सफ यादव सफ नालिका ॥ १४ ॥ मस्तुकं यधनिमानं ॥ पृष्ठं हीनं निधनं ॥ दूय स
 खसं यत्किं ॥ यादव यधनं रुतं ॥ १५ ॥ इति अमं सुरुतं ॥ ॥ मूलं मूलं दूकं यधटिका ॥ य
 वा

त्रिकि र्हिता ॥ मस्तुकं यधटिका ॥ खल्यो विवेकादगम्यता ॥ १६ ॥ सायायां वनवयो का ॥ यत्र या
 का चतुर्दश ॥ पृष्ठं यंत्रं रुतं वदा ॥ सिवाया चतुर्दश ॥ १७ ॥ मूलं नालिका ॥ मूलं यधटिका ॥ निधन
 कृत्य ॥ खल्यो विवेकादगम्यता ॥ सायायां मा रुतं ॥ १८ ॥ यत्रिवायं कृत्यं पुनः पृष्ठं मस्तु चतुर्दश ॥
 रुतं नालिका ॥ सिवायां स्यात् ॥ दल्यो विवेकादगम्यता ॥ १९ ॥ इति मूलं दूकं रुतं ॥ ॥ नववयोदि मृगं कृत्यः
 यावत् किं त्रिचतुर्दश ॥ छुक्का वद्वं दत्तं समुद्रादकिना यिवा ॥ २० ॥ यत्र यधटिका ॥ दूदिन ॥ छुक्का
 यंत्रं सफदिनं निधु ॥ विधयितुं रुतं रुतं दूवयुमानयि ॥ २१ ॥ रुतं यदगं मस्तुकं गदा सूर्यं छु
 लावला ॥ प्रथमदगं मस्तुकं रुतं यत्र सफ मगनी ॥ २२ ॥ छुक्का यत्र दिनी यत्र यंत्रं मानवमस्तुकं ॥

गानासुहृदाः सर्वस्मिं प्रवसकवर्जिता ॥ २३ ॥ यदि स्यात्सवलं वदुः । तथा यिकं गदायनी ॥
 हृती यार्यं चमीताना सकमी वदुः नारु वतु ॥ २४ ॥ ऊनसम्यदियकमययविः साधकावधिः ॥
 मेजातिमेतानासु हितादयनवेवहि ॥ २५ ॥ उद्विष्टदगमलोमनादुक्तुः ॥ गनिः ॥ गुरुः ॥
 सुकुमदिगीययु वदुः (यदि मन्वुध) ॥ २६ ॥ दिगीययं चमजीवः ॥ सकर्मनममगुरुः ॥ विहाय
 गुकादगमं स सुवसकर्मगुरुः ॥ २७ ॥ उकादगमसु सर्वसर्वकार्यसु ॥ गुरुः ॥ गुरुः ॥
 गवतं ह्यरुलं विह्वलं ॥ २८ ॥ गुरुः ॥ गुरुः ॥ गुरुः ॥ ॥ दगमवधिः ॥
 सुतयकपुः ॥ हिचनुमाः ॥ गुरुः ॥ यलं कीनवदुः ॥ गुरुः ॥ कर्मविवर्जयतु ॥ २९ ॥ पुनर्वसुद

क३

यं को न धतिउय कनुर्य । नवनिदिउयं कपुः सुगतिर्वचगुरुः ॥ ३० ॥ को न धानहनायाचः
 मद्यामेतुवनादिनी । उरुनाकृतिं कावाता लानुलोमगनिधनाः ॥ ३१ ॥ त्रिकादया सुमी सपुः
 कोलं चनुया निगम । संधा विष्ठातिमन्दना लोऊनां तय (गगुरुः) ॥ ३२ ॥ गुरुः ॥ गुरुः ॥
 नवनिदिनं ययुषा नो हि न्यां सुगमेतयाः ॥ पुवना रुवसं कपुः नाकुं स्यादहिकवर्ण ॥ ३३ ॥
 ॥ गुरुः ॥ गुरुः ॥ ॥ नवनिद्युगलं कपुः मेतु रुकागुयं सुगः ॥ पुनर्वसुध विह्वला गणसि
 यन्मुखावुधेः ॥ ३४ ॥ हृतायार्थवतानिधं सर्वसिद्धिचकालयगुः ॥ वारुना निवयं गनिगमनं च
 विधियत ॥ ३५ ॥ पुर्वार्यमद्या (समा) विगमवा कृतिं कायमः ॥ मूलं च (समा) मूसा रुया नवकार्य

श्री सुबोध

गणेश ॥ ३१ ॥ लकार्यमृगकार्यं खननं विवर्तयन् यद्वैवा (अमृशो यच्च गत्कार्यं
कालद्वय ॥ ३१ ॥ उरुनातिनयं वृषात्राहिर्ध्वं गच्छति त्रयं उरुवर्कं गणेशाय नमः कर्णम
लिखितं ॥ ३२ ॥ पासादकुरु रगहोषी या कालध्वजगालनं वनाहिष कर्म गच्छ कुर्याद्वधम
खगण ॥ ३२ ॥ वृत्तिन कुरु मृकार्यं विनाल ॥ ॥ पुनर्वसुद्वयं वृषामृग (धो व क न ग य ॥
मूलसुति त्रयं मेरुं हे व ध्वं कर्म गच्छ ॥ ४० ॥ सोमगुरु सुतं धर्माः वा नमस्क
नमस्कर्म । लघ्नमृवायमीनं वः कृष्याग्रध्वजलाधन ॥ ४१ ॥ वृत्तिरु व ध्वं क
र्म ॥ ॥ अमावास्या सयमीया यूलिमाया वरुदगी लविनालवर्जनीया गयग

नां विनिर्गम ॥ ४२ ॥ वृत्ति ॥ विजगतात्राहिनिचः शुव (अयिविवर्जितहा जगमृयुजिति
नामगुरुं निर्गमरुवं ॥ ४३ ॥ वृत्ति यगुनिर्गमनं ॥ ॥ उरुनासु विगायायाः त्राहिर्ध्वं
च पुनर्वसु नवमाच वरुदगीः मृग्या नानयत्तु ॥ ४४ ॥ वृत्ति यगुयवं ॥ ॥ मृग्या
मेरुद्वयं मूलं वा सवर्गवतिकल यूनवसुद्वयं अर्धः यतुना क यविकुय ॥ ४४ ॥ वृत्ति कय
विकुय यगुया ॥ ॥ नद्रानिधि त्रना मादो यूलिमाया वरुदगीः मृग्या नानयत्तु ॥ ४५ ॥ वृत्ति कय
गठाय मृयग ॥ ४६ ॥ अमावास्या नवमाच ना मवर्गवतिकल यूनवसुद्वयं अर्धः यतुना क यविकुय ॥ ४६ ॥ वृत्ति कय
गठाय मृयग ॥ ४६ ॥ मीन विधिक कर्कक यटिका द्वय लिखतु आदो मय मय वायगु

सिंहस्य घटी कादय ॥ ४१ ॥ तिथिर्गुरुगंदव लयगंठस्य जातक ॥ न किंचिदुदाजा
 गाः जीवने वधनी रुवन् ॥ ४२ ॥ ॐ तिर्गजक रुल ॥ ॥ सफुर्ग्यं च न विद्वान् वृक्षस्य युति
 यदि न ॥ सचरु र्वाक्यो या ॥ गवर्जितय ॥ सदा गुरु ॥ ४३ ॥ ॐ तिसचरु याग ॥ ॥ निजा
 मुक वृध रुडा गतिनीर्का कूड जया गुलूयु ॥ व सयूधु सिद्धिया गगुरु गुरु ॥ ४० ॥
 ॥ ॥ ॐ तिसिद्धियाग ॥ ॥ विष्णु क श्रीतिरायान् सोकाग ॥ रुन कथा ॥ अतिग
 ३४ ॥ मुकुर्मेव ॥ ४ तिगुल गमेव च ॥ ४१ ॥ ग ॥ अहृदि ध्रुव येव या याग रुषेन कथा ॥ वज्रसू
 द्वियति यागा वलिया नय लिद्य निव ॥ ४२ ॥ सिद्धिसाधु गुरु मुका वृक्ष पेदाथ वेष्टि ॥

२८

था

गय विगगिना का ना नाम गु ल्य रुला श्री ॥ ४३ ॥ ॐ तिसक य विगगिना ॥ ॥ नवश्च वालव
 वेव का वव रुतिन रुथा ॥ गल शुव निया विरु ॥ सफे गानि यानि च ॥ ४४ ॥ रुषुय कवु
 दृष्ठां गकु निव श्रिभंदल ॥ वरुषा दशनाग ॥ दमा वास्या दलंदन ॥ ४५ ॥ मुक य क यदा
 याश्च किं नु दू प्रथम दन ॥ विनान्य गानि वला त्रिकना ॥ निज गु वृक्षा ॥ ४६ ॥ मुक युति
 यदां न च व वा र्वा कन भारु व ॥ ४७ ॥ अका द ने व रुया नि वन लील विरु गग ॥ ४८ ॥
 ॥ ॐ तिकल न विवान ॥ ॥ दसाय मान ना धा गा वदु रा ददि ति गुरु ॥ उज र्गम श्रयि
 न ना रु गम उम दि वा कन ॥ ४९ ॥ वृक्ष वायु ॥ ग क ॥ व द्धि मिगु ग क ॥ निर्गनि ॥ उल विधे
 द्या

विधिविष्णु वगवांलहनसुधा ॥ ३८२ ॥ अजे कयाद दिव्ययूषातिकथिता वृधे ॥ अष्ट
विंशति संख्यानां नरुणाणां मधीश्वरा ॥ ३८० ॥ अतिनरुणाधियति विजात्र ॥ अतिश्रीका
लिनाथरुणो मूढरु ॥ ० ॥ गिरा मूर्ख कर्णने उल्लुब्ध पृच्छति वंशनाः शृवन् धनधान्या
नां लालनस्य न संशयः ॥ ३८१ ॥ स्कंधग्रीवा कंधरु स्य गिरा लोहिदः स्वतः कृत्तिनाहि २२
समालरु रक्षाया नादिसिधाति ॥ ३८२ ॥ ऊर्ध्वा लिंग कटि संधः कंठ्या लारु संगा रुवंश ॥
जानुयुग्यदसं गमा रुकुण युजायनं ॥ ३८३ ॥ कसहा रुवंश मयूः रुलादिसं गनं लुहं ॥
हर्ता गल कसं सख्य काय सिद्धि प्रेजायनं ॥ ३८४ ॥ काष्ठं कयट सख्य गह्वरी गमनारुयः

हं गंगामा न्नराग्रदि। सार्णसिद्धिपुजाय नमः ॥ ३०८ ॥ देवगहनकुलं दिशस्तु नं शुभं रुवतः
 ॥ ह्यर्षदिकुम्भितसिद्धिः विदि कृष्णन जायतं ॥ ३०९ ॥ ॐ ह्यर्षगवि यकर्त ॥ ॥ गि
 आमीनं वमं यवः दद्युर्धनसु गियता ॥ वनस्य शृष्टं कृष्णं यलाया कृष्णया ॥ ॥
 ॥ ३१० ॥ सकनं मिथुनं यवः घटिका विजिलन्या ॥ यलो ॥ यवककं ववायव गमीव
 दा ॥ यला ॥ स्मृता ॥ ३११ ॥ घटिकयं वसिं कलो द्ययं वदा यला ॥ स्मृता ॥ कन्याया वदुन्य
 यं वः यला ॥ स्मृता ॥ ३१२ ॥ ॐ निलेन युमार्ण ॥ ॥ सूर्यधनूयना मुवः ॥

धूमानकचतुर्न। चन्दनैर्वचनैर्वचकवसिगण्डला॥ ३१०॥ कऊरुषयदागथाः
नकेवकगुदीदने। वृधकयूनकमृदाः रुतिदुर्लभिनयक॥ ३११॥ श्रीनवसुदयंजीवः
रुतिर्दावणका निवः अथगुकसिनादयः गुकधन्यानियानिव॥ ३१२॥ गनीनैलति
नादयाः रुषुलोला रुमूर्कमनादवमरुषीका। गोमासाश्चतिलसवर्षा॥ ३१३॥ अजा
मयोवदान्त्यीकनोचोर्नचनिमिगिरं। खर्ग्यविषयूजाहिः सर्वैर्वाग्निकिरुमा॥
॥ ३१४॥ ॐतिग्रहदार्त॥ ॥ मयगुलोसूरिकवः सूरिः छिद्रसूखीनल॥ रुषगुनोस्व
ल्यरुष्टिपूजाप्रीतवहग्रह॥ ३१५॥ अनोरुष्टिपूजानाग्नोववमिथुलगुनो॥ कऊगु

निनिगकं ॥ अनादृष्टिधान्यनं वः गजलं कथं दृष्टं ॥ ३८८ ॥ आषाढं लिमायां तु वायुवय
 दिमालूक। मगका मूषका कीना ॥ जायं न सलरा रुथा ॥ ३८९ ॥ आषाढं लिमायां दुर्हल्य
 य दिमालूक। धर्मनिला रुदा लाका ॥ धनधान्या रुन्यं गुरु ॥ ३९० ॥ आषाढं लिमायां वैदी
 गमनं वा किमालूक। सुविनादिगदा लाका गीतं वा इमं रुतसुवा ॥ ४०० ॥ वैदिकं एव वैदिकं निः
 यष्टिं मंत्रं जना रुयं। अमृतयदि वायु स्याः सुहृत् कं जायते न दा ॥ ४०१ ॥ सर्वं मास्य लिमा
 यां रुकस्य यदा रुवंत ॥ उक्ता ता ना वं जया न य निधिः एगी सूर्यया ॥ ४०२ ॥ वृत्तिं लिमा
 रुत ॥ ॥ आषाढं शुक्रियं रुस्य दितीया या न वषति। यदि मद्य रुदा रुष्टिः ॥ अ वः एजाय
 न कुर्व ॥ ४०३ ॥ रुतीया या पूर्व वायु पूर्वया निव वा निद न व मद्या रुदा रुद्र वषति वि

२३॥ वृषा ॥

मूलजलं ॥ ४०४ ॥ चतुर्थां दक्षिणा वायु मर्द्य ४ पूर्ववगच्छति । आग्निं न च तदा मासं
दृष्टि रवेति निश्चितं ॥ ४०५ ॥ यं च मर्द्यां मूर्ध्ना वायु दृष्ट्यं न च यदा वृद्धे न तदा च कार्त्तिक
क मास्य दृष्टि रवेति निश्चितं ॥ ४०६ ॥ चतुर्थयं च दिवसं यदा वर्धति वा विद ॥ अति
दृष्ट्यं चतुर्हिकं जायत नाश संसय ॥ ४०७ ॥ दिवद्वयं ऊदा वाता दक्षिणयश्चिम तदा ३२
न स्य किं धान्य धान्यानि दृष्टि रवेति चतुर्जायत ॥ ४०८ ॥ रुतिया यां च यं च मर्द्यां वायु दृ
ष्ट्यं न वा यदि न तदा धान्यानि जायत सर्वं दृष्ट्यं यथा यमं ॥ ४०९ ॥ वृत्ति आसा रुष्टु कं
दितीया दिदिन चतुष्टय रत्नं ॥ यो धमूलं रत्नं चन्द्र चो लं च ग रत्नि न आ
मूलादि रत्नं विष्टि रत्नं सा

आद्रादि विष्णु वाता ॥ विष्टि रत्नं सा

अंगनया कं सासु ग रत्नं न सा

द्रादिना विष्णु वातं सूर्य चो लं च वषति ॥ ४१० ॥ यदि ति कं ति लो म स्य कृश का पि
ग्रह रुदा न च मर्द्यां मूर्ध्ना ना जायत च मर्द्यं ॥ ४११ ॥ शुक्र कृशं कृशं मासं
दृष्ट्यं न च मर्द्यं ॥ चतुर्चदिन नाथ च सर्वं नाथ शुक्रं सदा ॥ ४१२ ॥ न ना नाद्रु स
र्वं धी न्यं मर्द्यं नाज विग्रह न वृध कृशं न वी चन्द्र विना ध सर्वं रुष्टु जी ॥ ४१३ ॥ उत्प
र्त्ति सूर्य धी न्या नां यं च मासं न जायत ॥ शुक्र कृशं वृध रुष्टु चन्द्र कृशं रुष्टु सूर्यं ॥ ४१४ ॥
या र्ध दानां रुष्टु धी न्या नां च मर्द्यं ॥ न विष्टु रुष्टु यष्टु नां च मर्द्यं ॥ ४१५ ॥
वृध कृशं न च चन्द्र सूर्य धान्य मर्द्यं ॥ शुक्र कृशं रुष्टु नो लो म कया दिनां मर्द्यं ॥

२॥ श्री ब्रह्मा

॥ ४१७ ॥ लोम कर्ण गनिनाइ तस्त्रादिनां मरुर्धना ॥ चतु कर्ण नो नाहो सुहिर्लव
 न्दरास्तनं ॥ ४१८ ॥ यष्टु नाशमध्वान्यद्विगुदादिनां मरुर्धना ॥ गुतु कर्ण नो नाइ
 यष्टु नाशमृणुकथं ॥ ४१९ ॥ लोमनाभना क्वाविना धग्ववृधद्विहृष्टेयसिलोमक
 र्णयदासंगिनालोमाकश्चरार्गवा ॥ ४२० ॥ यष्टु नासंगुतकायासद्युगकीलमरुर्धना ॥ मंद
 कर्णयदासंगिमन्दुनाइवृधस्तथा ॥ ४२१ ॥ चतुष्टयदाननागश्चद्विदनां चजायत ॥ लोमक
 र्णयदासकिंशुकलोमनिग्नकना ॥ ४२२ ॥ तदासूक्तायष्टुनां चर्णयस्यचमरुर्धना ॥ लोमक
 र्णरागवंचध्वान्यानां चमरुर्धना ॥ ४२३ ॥ गनिकर्णचतुस्तथा वस्तुनां चमरुर्धना ॥ गु

नूकं होम रुक्मं यजायीत यजायत ॥ ७३३ ॥ यदुत्तमं सप्तमाथारुक्मं रुक्मं न त्वकीर्ति
 र्गं ॥ **इति नानि रुक्मं रुक्मं** ॥ चंद्रादयः कुंजं कुंजं रुक्मं न्यादिद्वयं चंद्रादयः रुक्मं
 खनयद्विकयादिकं ॥ ७३४ ॥ यजायीत वृधं रुक्मं सामं रुक्मादयारुक्मं न त्विकं रुक्माद्वि
 द्विगतिं सामं रुक्मादयः ॥ ७३५ ॥ चन्द्रं रुक्मं रुक्मं चन्द्रं वृधं नमूदया रुक्मि ॥ यदुत्तमं सप्तमाथारुक्मं
 इति रुक्मं न त्विकं रुक्मं यजायत ॥ ७३६ ॥ उदिती च वृधं रुक्मं यदा ना रुक्मा नित्यं नो न यशुं रुक्मं
 यजायीत रुक्मं न्याना रुक्मं रुक्मं ॥ ७३७ ॥ रुक्मं रुक्मं सामं सूर्यं सूर्यं युगादयारुक्मं न त्विकं
 यादुत्तमं न यीत रुक्मं रुक्मं रुक्मं रुक्मं ॥ ७३८ ॥ यदादयः रुक्मं रुक्मं रुक्मं रुक्मं रुक्मं रुक्मं रुक्मं रुक्मं

दृगानाचनदादृदि गुणानां न कृवा ससा ॥ ७३२ ॥ यदा समुद्रय या किं गति कृण निश्च
 ल ॥ तदा दृगानां का कृनां सा कृनां च मरु र्घना ॥ ७४० ॥ ॥ ७४१ ॥ अग्निवलयदा दार्या गनिलेन रुद्रा र्य ॥ बुध राहु च इहिकं सुहिकं रिगु २४
 नन्दनं ॥ ७७२ ॥ सुहिकं वानुना दार्या यदि स्या ग्रेहो हिकं ॥ कल्याणं च सुहिकं
 स्या अर्घ्यायां सिगुगु ॥ ७७३ ॥ कर्षा साव रुद्रा मन्द रोम कट कपी उर्न ॥ बुध निना
 प्रमाणा प्रमरु र्घा वय कालना ॥ ७७७ ॥ सूर्य सर्वोपि धन्यानि मरु र्घा नि निवेतिव ॥

(२)

सुकृ च मरु निवर्षा सस्यानि सकनानि च ॥ ७७८ ॥ मूल गुगु कृत्वा नां मूला नां वरु धार
 व ॥ रोम मरु स्या चाप स्या द्ध च सर्व संयद ॥ ७७९ ॥ पूर्वो वाटा गत रोम पीठ स्यात्य
 गुर्य किं ॥ क रोम मरु र्घा ना धन्या पूर्वो वा गत रुवंत ॥ ७८० ॥ उरु वा वाट क जीव गुण
 नां च मरु र्घना ॥ रोम ये व युजा नी नां जायन्त च मरु र्घना ॥ ७८१ ॥ अहि जिना मिन क
 उं उदा द्या या मूना रुवंत ॥ सर्व स स्या नि जायन्त ॥ सुहिकं च कृञ्ज यथा ॥ ७८२ ॥ प्रवलय
 यदा जीव रुद्रा स्य सर्व संयद ॥ बुध रा सा राजा युगं गने रुद्रा नी कृणी न का ॥ ७८० ॥ दृहि
 कार्या च ना हि न्यां उदा जीवा हिति हिति न म धमा नि गे दो दृष्टि च स स्या नि तदा दृष्टि म

धमा ॥ ७८१ ॥ आदायामृगणी धव यदावाचस्य निमिह्नि ॥ इहिक स्यादना दृष्टि पुजा
 नां च सदा निर्व ॥ ७८२ ॥ कालुनी दय रुकु मघायां च जदा उरु ॥ सुहिकं व सुहृष्टि धः
 पुजा नां स्यादना गता ॥ ७८३ ॥ विगसाया यदा जीव रुदा विजय था धना ॥ वि विज रुर्वथा
 व सस्त्रा निचक्र विक्क विग ॥ ७८४ ॥ विगसा मेरु था जीव धनं व र्वं च मधर्म ॥ अस्त्रा मूल ३८
 मा सरु र्मं दृष्टि मा सद्यं न च ॥ ७८५ ॥ पूर्वसा र्मं लिना ज दि दृष्टि मि ॥ न दाना र्मं सुह
 र्मं व सुहृष्टि पुजा य न ॥ ७८६ ॥ अना दृष्टि इहिकं न व र्मं स लिन गु लू ॥ ध निष्ठायां
 च लुक्क पि पी गर व नि रुक्क ना ॥ ७८७ ॥ वृत्ति न क र्म ग्र रु रा ग वि चाल ॥ वृत्ति ग्री का नि नार्थ
 रु ला घा ट ३

कृमोणी ध्रुवा ध अर्ध प्रक न र्म रु नी र्म ॥ च व वा ना अग्नि पी लि लूल ला रु लू पी अ वृ उ प्र क र्म
 का ॥ व वा वि वृ ना दि नी व वा का की मृ ग नि ला ॥ कृ घ द द्वा आ डा क का रु दि पु न र्व सु द रु हा
 ज पु द्वा वि रु र्म ना अग्नि या म मि मू र्म म घा भा टा टि द् पूर्व रु रा गु पी ट टा य पि उ रु रु रा गु नी
 पू व ण ट रु रु य या न लि वि ज नू र्म ना गा स्त्रा नि नि उ न ना वि ग्म वा न नी नू र्म अ नू ना टा ना या
 पि यू र्म र्म य या रु रि मू ला ॥ रु ध रु ट पूर्व सा टा रु रु ज जि उ रा वा टा रु रु जा वा अ रि जि नू रि वि
 र्व र्व र्वा न व न र्गी गु र्ग ध र्म र्म र्म ग नि स र्म ग रि वा ॥ स सा द दि पूर्व रु रु दू थ न दा उ रु
 रु रु द दा च वि न व नी ॥ ॥ अना म व उ र्व दृ व क द्वा ३ दा रु ४ मा ना ८ या थ ग ला टा न

नायूरलाभरखाजा १०८ गण ११ का वा १२ ॥ ॥ अग्निपीरुनिकरिहिकायादमं व ॥ रुहि
 का नांठयायादनाहिनी ॥ सुगनिद्वयायादगयं पुनर्वसुमिथून ॥ पुनर्वसुयादमं कं वृषा
 अश्लेषा नं कं ॥ मघा पूर्व कालगुणी उरुनायादसिंह ॥ उरुना नांठयायादहस्त विज
 द्धकं न्या विजद्वस्वति विष्णवा यादगयं तुला ॥ विष्णवा यादमं कं अनूरा राशु कृत्तिका विद्व
 धमूल पूर्वोषा उरुनायादधनू ॥ उरुना नांठयायादाश्रवण धनिष्ठा मकर ॥ धनिष्ठा
 गतहिषा पूर्व रुद्रयादगयं कुरु ॥ पूर्व रुद्रयादमं कं ॥ उरुना नवमिमीन ॥ सक विंशतिरा
 नां च नवहि ८ नवहियदे ॥ अग्निपी प्रमूषा नाश्रु मंघा घा नासय ८ स्मृता ॥ ॥ गनुधनं

आरुवन्धु पुष्यगुरुकलगुका ॥ मरपीधर्मधर्माय ८ यायादादगनासय ॥ ॥ रुनीयद
 गमं यं च नवमं यं च मं दग ॥ दगयं वा सुमं उरु सकमं विंशतिरुथा ॥ ३६ ॥ विस्वाउग्ररुद्रुहि
 नां मं यथनं वृहयिगा ॥ नायचय ८ धनं लयवष्टु वग्रुद्रुष्टुय ॥ ३७ ॥ रुनीयदगम्यमन्दा न
 वमं यं च मं गुनु ॥ विंशतिं विष्णु गविष्णं च उधवा सुमं कुरु ॥ ४० ॥ न विवा लं न गं युका यदा सा
 न्योषष्टुया ॥ अमवा स्या नदा दधि नूड मूडा च जायते ॥ ४१ ॥ अयना सिरुना मा सा प्रक यं वा
 गद विता ॥ दविना घटिका कृया यना सिरु नवा सता ॥ ४२ ॥ प्रक यं कं यदा या कि मिथयं
 उयादग ॥ उया रुद्रा कुर्यं या कि वा जिना मनुजा गजा ॥ ४३ ॥ सूर्ययुका च न कुरु दृष्टा दिरु

यं यं आदित्यं वृद्धं शुक्रं ४८ निचन्द्रं ४९ कृज सुधा ॥ ४४ ॥ जिवा नारु शुक्रं शुक्रं ४९ कामं कु नानल
रुनाः आदित्यं वरु वं छाकाः वृद्धं सम्यगिरु नमा ॥ ४५ ॥ शुक्रं स्या च धनं या कि ४९ नो यी ज च जाय
न ॥ चंदं रुवति नारु शुक्रं लोम्यं च वध वधनं ॥ ४६ ॥ शुक्रं यनम कल्यानं नारु रु निच जाय न ॥ कं नो ३९
च प्रान सं दं रुः वं कि च कुं मुदा हिर्न ॥ ४७ ॥ पुरुवा १ विरुव २ शुक्र ३ प्रमादा ४ थ प्रजायति ४१ शु
गिना ४८ श्री ४९ मूर्खो १० रुवा ८ युवा २ धना १० न ८ थ धन ११ ॥ ४८ ॥ वरु धन्य ४१२ प्रमाथि च १३ विरु
मा १४ पुरुव ४१८ सुधा विरुमान् १० सुखान् १० नाना ४१८ याथिवा १२ यय २० ॥ वरु धना विरुति
न सुष्टिलं प्रजाय न ॥ ४९ ॥ सर्व जिधे २१ सुवंधालि च २२ विनाधि २३ विरु २४ सुधा १५ नो २६ ध

नं धन २० नामा विजय २० जया २८ यन ४॥ ४० ॥ मत्मा १॥ २२ इमूरव ३० शुभो ४९ रुमन म्ब ४३ विलम्ब
का ३२ विकानि ३३ सर्व लि ३४ चान्य ४९ युव ३८ शुक्र रु हिं थ ३९ ॥ ४१ ॥ लम्ब रु ३९ नथ काधी
३८ विस्वा व सु सुधा यन ४३२ पना रुवा रुवा शु यना ४० विरु नं च विं गति ४॥ ४२ ॥ युव ४९ १ किल क ४
४२ सोम्य ४३ सुधा साधन न ४४ विनाध रु ४८ सेमा र्था न ४९ विधा वि ४९ युमा थ वि ४९ ॥
॥ ४३ ॥ आनन्दो ४८ नो रु शु शु यि ४२ न ४० विं गने सुधा ४१ काल ४८ २ सि द्धार्थ ४३ नो दो ४८ ४॥
च इमं नि ४८ इन्द्र हिं ४९ सुधा ॥ ४४ ॥ अपना रु विना गी लि ४९ न का शु रु ४८ का धन ४२ सुधा
कं य रु वत्स लम्ब न्या १० रु द स्या मी च विं गति ४१ वत्स ना य विं ना र्था ना नाम रु ल्य रु ल यदा ४॥

विष्णुवाच॥

॥ ४८ ॥ मंसवृष्टिकया होमः शुक्राष्टकनाहताः ॥ वृधः कन्यामिधूनायाः प्राक् ॥ कर्कस्य व
नुमाः ॥ ४९ ॥ स्यात्मीनध्वनिनाजिवः गनिमकनकुह्याः सिंहस्याधियतिसूर्यः ॥ नागिनो
थाउदाहताः ॥ ५० ॥ कन्यानाशुष्टुष्टुप्राक् ॥ नाशुष्टुमिधूनास्यवनाशुनीर्ध्वनूवर्धुदिः ॥ दि
कंगनिचदस्यव ॥ ५१ ॥ मासं शुक्रवृधदित्याः ॥ अर्धवर्धुदिनदार्पणं होमश्चिप्यर्कजिवान् ॥ ५२ ॥
साध्ववृधदयंगनिः ॥ ५३ ॥ नाशुनाशुकुष्टुसदाउक्तं साध्वमर्कं वत्सर्नकाहिकादिगुना
मासागताहिसिधिरियुगा ॥ ५४ ॥ सकविंशतिरिहोनादिनगानेकसंयुगा ॥ साध्वसामान्य
वास्मिन् नूदिहस्यगुरु ॥ ५५ ॥ अर्धमासदयं सूर्यः मन्दनं च गताहवन् ॥ उदितायश्चिभंश

रगः नवमासं समीकृतं ॥ ५६ ॥ दशार्धसूर्यमर्धवृधः गताहवत्सं ॥ ५७ ॥ एकग्रामं
पूतं वापि दुर्हिकं नाज विगृहं विवाहं निथयाजयाः शुक्रदासानविद्यतं ॥ ५८ ॥ दशदा
याः स्त्रियस्तना विगताद्यानवृत्तकाः गिमुक्तनध्वमूनाद्याः पूतवायुचतुर्दश ॥ ५९ ॥
शुक्लपूगयामाहविधिः शुक्लनवृत्तकाकविन् ॥ शुक्लीयाः गतनद्याः यागपूतवयाव
व ॥ ६० ॥ उदयास्तमनं शुक्राः वृधश्चष्टष्टिकानकः जलनागिहिनः चतुः यज्ञकं संक्रमस्त
था ॥ ६१ ॥ वृधः शुक्रसमीपे ॥ कनार्यकार्णवीमहिः गयानकगगलान् समूहमपिष्णव
यन् ॥ ६२ ॥ वृधं गलकाष्टष्टिः शुक्लीयाष्टष्टिः गनिध्वलवालिपूष्पमहिहवाः यश्चत्सं व

के
बुधवाच॥

लगुगुनु॥ १०॥ कर्क कर्क चर्चि रुचः सकनचदिवाकल॥ पूर्ववायश्चिमन्वायि-दालं
कुर्याच्चिमन्मां॥ ११॥ मसदृमदृश्चिकचः सुलवायियद्वानवि॥ गुरुदालं तदाकुर्याच्च
रुलवायिदकि॥ १२॥ धनुमिथूनकन्यासूः मीनचयदिरानूनात्॥ नकर्कुर्यात्तदागर्हः
रुमदृखमवायन॥ १३॥ यदेकमासंगुरुनं जायंनं गनिसूर्यया॥ ससुकायेकयंया ३२
कि॥ तदाह्यास्यत्रस्यनं॥ १४॥ ग्रहादिगोचग्रहास्तो धान्यह्यालनागको॥ सर्वयकोचदुष्ट
यदुहिकमलनप्रदो॥ १५॥ उयनागयदाभंषपीघनं च तदाजना॥ कन्याकाच्यकिला
नाथपांचनाशुकलिंगक॥ १६॥ दृषवग्रहलगाया॥ यगवयथिकाजना॥ मरुकासु

जावचः नपीघंनचसर्वदा॥ १७॥ लविचनुमसार्गसू॥ मिथूनचमलांगना॥ पीघनंवाहिका
मस्याजमूनाकटवासिन॥ १८॥ कर्कनग्रहलगायीजः मन्त्रीदिनांचजायनः अहिलसवनानां
चः गथमस्यनिवासिनां॥ १९॥ सिंहचग्रहनपीजः सर्वथावेनवासिनां नृयानां नृपकुल्यानां
मनूजानांचजायन॥ २०॥ कन्यायांग्रहलगायीजः विदूषाणांचगसिनां कविनां लखका
नांचजायनपीदगारुवन्॥ २१॥ तुलायामूयनागचदणनार्वककाइका॥ मासवधयलांया
ग्रपीघनंसाधवधय॥ २२॥ दृष्टिकग्रहलगायीजः सूर्यजातग्रजायन॥ उलवस्यचम
घस्यचोल्याधयकास्यच॥ २३॥ यदायनागश्चायं च तदासात्याश्रवाजिन॥ विदुहमस्ययंवा

निबन्धनाय

ला ४ वी घनकाली यथाविग ॥ ८४ ॥ सकलं ग्रहणयी जनीवानां मनुवादिनां । सुविना नारुटानां
व विरुद्धस्य संकथ ॥ ८५ ॥ कृष्णायनाग्नेयी घनकाली विजायस्त्रिमाजना ॥ गच्छतादलदारी
नादगभवन्नकात्रय ॥ ८६ ॥ मीनायनाग्नेयी घनकाली लड्या निगमला ॥ जनाय जि विनाना
कायवया कृष्णथानना ॥ ८७ ॥ ॥ इति ग्रहणरुलं ॥ ॥ कथं यथा ॥ ८८ ॥ निरुद्धा नीलानस्य रुयंक ४
ल ॥ विद्युत्तानाग्नेयी च यलिवं वधना गच्छ ॥ ८९ ॥ दिगीरुग्नेरुयंकुयानि निघा
गानुयलिनिरुद्ध ॥ रुग्ने वायुधुनद्वीलही निघदायके ॥ ९० ॥ ग्रहण र्दनाज रुद्ध क
नोदृष्टं तथैव च ॥ ग्रहणार्कं मरुदृष्टिः सर्वदा य विना सिनि ॥ ९० ॥ धूलिवयादिरुलं ॥

अग्निना मुदितः कुरु न्यादग्नेयकया लकः रुलप्यत्र किनागेर्गः कर्हि काया कलिर्गयं ॥ ९१ ॥
नाहिन्यां मूलसंपर्गः मृगवागिनवाधिर्यः आद्रोयां जलजाधिगः मग्ने कर्गं पुनर्वसो ॥ ९२ ॥
यूषावमगधधीग्नेः सूर्यायां कानिकाधिर्यः मद्यायां मंगनार्थं च यूषायां वाइनायकं ॥ ९३ ॥
उरुयिन्या नृय रुन्याः दूरुना रुनुणी गन ॥ दन्दकाधिर्यं रुलः विजयां कुरु रुमिर्यं ॥ ९४ ॥
स्वायां कास्मीलकाग्नेयः रुयतिनां विनागक ॥ ९५ ॥ कुरुलगा नाविग्नेयायां विनागक ॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥ मिथुयोडस्य नार्थं चः तस्य रुमकथदक ॥ अन्धुमेडा कनार्थं च मूलका रुं नि निधिर्ग ॥
॥ ९८ ॥ यूषाया र कागिनाज मूरुनाया र क रुथः योऽथ य नि विवधानंः ग्रवणक कय ग्वलं ॥

॥ २१ ॥ वसो यं च नदा धिर्गं. वारुणं हि रुच्यं स्वर्गः पूर्व एव यद वा गने मिषं गं गत्वा रुचः
 ॥ २२ ॥ न वत्यां मुदिनं कं मो. किनाता धिये निर्वधः ॥ धृमा कालः स पृष्ठः कं विविधस्य पीठ
 क ॥ २३ ॥ नृति कं पु उदय रुर्ल ॥ ॥ एतन्मूर्ति किं वा नवः कार्त्तिके नृ कया रुचं. आयुष्मान्त्वा
 निर्मयुक्ताः नियना सः यस्तु कय ॥ १०० ॥ यं च नत कं गमाय ॥ धनमृत्तो च मया द्या यत्वा
 गः स्य निष्पवना ॥ तं विना मिथूनयं च रुयाः पृष्ठं दया वृध ॥ १ ॥ गीर्षा दया यत्वा लः
 ॥ सिंह एव रुचः ॥ दिवा वल धुमिने नु. वना वा जो तथ दिना ॥ २ ॥ तद्वर्ष दिगुषी रु
 यत्ना मे ही न क काल यत् ॥ मूर्ति हि रुचं लं हा गः एव कं व रुर्ल रुचं ॥ ३ ॥ चतुर्वेद च